॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथर्ववेदीय

श्रीरामोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

प्रथम खण्ड

श्रीरामका स्वरूप, उनके अङ्ग, राम-मन्त्रका माहात्म्य

एक समय सनकादि योगीन्द्रों तथा अन्य ऋषियों और प्रह्लादादि भगवान् विष्णुके भक्तोंने हनुमान्‌जीसे यह पूछा—हे महाबाहु महाबलवान् वायुपुत्र! आप यह बतलायें कि अठारहों पुराणों, अठारहों स्मृतियों, चारों वेदों, सम्पूर्ण शास्त्रों एवं समस्त अध्यात्मविद्याओंमें ब्रह्मवादियोंके लिये कौन-सा तत्त्व उपदिष्ट हुआ है? विष्णुके समस्त नामोंमेंसे तथा गणेश, सूर्य, शिव और शक्ति—इनमेंसे वह तत्त्व कौन-सा है?॥ १—३॥

श्रीहनुमान्‌जीने उत्तर दिया—योगीन्द्रवृन्द, ऋषिगण तथा विष्णुभक्तजन! आप संसारके बन्धनको नाश करनेवाली मेरी बात सुनें। इन सब (वेदादिकों)-में परम तत्त्व ब्रह्मस्वरूप तारक ही है। राम ही परम ब्रह्म हैं। राम ही परम तपःस्वरूप हैं। राम ही परम तत्त्व हैं। वे श्रीराम ही तारकब्रह्म हैं॥ ४-५॥

श्रीपवनपुत्रके यह उपदेश देनेपर योगीन्द्रों, ऋषियों और विष्णुभक्तोंने फिर हनुमान्‌जीसे पूछा—हनुमान्‌जी! आप हमें श्रीरामके अङ्गोंका उपदेश करें। तब उन पवनकुमारने कहा—'गणेश, सरस्वती, दुर्गा, क्षेत्रपाल, सूर्य, चन्द्र, नारायण, नरसिंह, वासुदेव, वाराह तथा और भी दूसरे सभी देवताओंके मन्त्रोंको, श्रीसीताजी, लक्ष्मणजी, हनुमान्, शत्रुघ्न, विभीषण, सुग्रीव, अङ्गद, जाम्बवान् और भरतजी—इन सबको श्रीरामका अङ्ग जानना चाहिये। अङ्गोंकी पूजाके बिना राम-मन्त्रका जप विघ्नकारक होता है'॥ ६॥

इस प्रकार हनुमान्‌जीके कहनेपर उन सब योगीन्द्रादिने पुनः उनसे पूछा—महाबलवान् अञ्जनीकुमार! जो गृहस्थ ब्राह्मण (ब्रह्मवादी) हैं, उनको प्रणवका अधिकार कैसे हो सकता है?

श्रीहनुमान्‌जी बोले—एक बार श्रीअयोध्याजीमें रत्नसिंहासनासीन भगवान् श्रीरामसे मैंने इसी प्रकार पूछा था—'योगियोंके चित्तरूपी मानसरोवरमें विहार करनेवाले हंसके समान सीतानाथ! गृहस्थ ब्राह्मणोंको प्रणवमें किस प्रकार अधिकार प्राप्त हो?' भगवान् श्रीरामने बताया—'जिनको इस छः अक्षरके मेरे मन्त्रका अधिकार प्राप्त है, उन्हींको प्रणव-जपका अधिकार है, दूसरोंको नहीं। जो प्रणवको केवल अकार, उकार, मकार और अर्धमात्रासहित जपकर पुनः 'रामचन्द्र' मन्त्रका जप करता है, मैं उसका कल्याण करता हूँ। इसलिये प्रणवके अकार, उकार, मकार एवं अर्धमात्राके ऋषि, छन्द, देवताका न्यास करके, इसी प्रकार वर्ण, चतुर्विध स्वर, वेद, अग्नि, गुण आदिका उच्चारण करके, उनका न्यास करके प्रणव-मन्त्रोंको

दुगुना जप करके पश्चात् राम-मन्त्रके आगे एवं पीछे प्रणव लगाकर जो जप करता है, वह श्रीरामका स्वरूप ही हो जाता है। तात्पर्य यह कि पहले प्रणवके तीनों अक्षरोंके ऋषि, देवता, छन्दको जानकर उनका न्यास करना चाहिये। फिर प्रणवकलामें कहे गये षडक्षरमन्त्रोंका उनके आदि-अन्तमें प्रणव लगाकर जप करना चाहिये। यह प्रणव-कलामें कहा गया। षडक्षरमन्त्र श्रीराम-षडक्षरमन्त्र ही है।'

हनुमान्‌जीने कहा कि 'मुझसे भगवान् श्रीरामने यह बतलाया है। इसलिये प्रणव श्रीरामका अङ्ग बतलाया गया है।' इस प्रकार पवनपुत्रके कहनेपर उन ऋषियोंने पुनः श्रीहनुमान्‌जीसे पूछा और उनके उत्तरमें हनुमान्‌जीने बताया—''श्रीरामके भक्त श्रीविभीषणजीकी बनायी हुई 'श्रीरामपरिचर्या' में सात सहस्र संस्कृत-वाक्य, सात सहस्र गद्य, पाँच सौ आर्याछन्द, आठ सहस्र श्लोक, चौबीस सहस्र पद्य, दस सहस्र दण्डक हैं। इन मन्त्रोंके क्रमको जानकर जीव कृतकृत्य हो जाता है''॥ ७—१०॥

द्वितीय खण्ड

श्रीरामकी प्राप्तिके साधन

श्रीहनुमान्‌जीने कहा—एक समयकी बात है, विभीषणने सिंहासनासीन रावणान्तक भगवान् श्रीरामको पृथ्वीपर लेटकर दण्डवत् प्रणाम करके उनसे प्रार्थना की—''हे महाबाहु श्रीरघुनाथजी! मैंने अपनी 'श्रीरामपरिचर्या' में कैवल्यस्वरूपका वर्णन किया है। वह सबके लिये सुलभ नहीं। अतः अज्ञजनोंकी सुलभताके लिये आप अपने सुलभ स्वरूपका उपदेश करें''॥ ११॥

यह सुनकर भगवान् श्रीरामने कहा—'तुम्हारे ग्रन्थमें जो पाँच दण्डक हैं, वे घोर-से-घोर पापात्माओंको भी पवित्र करनेवाले हैं। इनके अतिरिक्त जो मेरे छियानबे करोड़ नामों (राम)-का जप करता है, वह भी उन सभी पापोंसे छूट जाता है। इतना ही नहीं, वह स्वतः सच्चिदानन्दस्वरूप हो जाता है'॥ १२॥

विभीषणजीने पुनः प्रार्थना की—'जो पाँच दण्डक या छियानबे करोड़ राम-नाम जपनेमें असमर्थ हों, वे क्या करें?' भगवान् श्रीरामने बतलाया—'आदि-अन्तमें प्रणवसे सम्पुटित करके मेरे मन्त्रका पचास लाख जप, इसी प्रकार मेरे मन्त्रसे दुगुने प्रणवका जप जो करता है, वह निःसंदेह मेरा स्वरूप ही हो जाता है।' विभीषणजीने पुनः प्रार्थना की कि 'जो इतना करनेमें भी असमर्थ हों, वे क्या करें?' भगवान् श्रीरामने कहा—'वे तीन पद्यों (गायत्री)-का पुरश्चरण करें और जो इसमें भी असमर्थ हों, वे मेरी गीता (रामगीता), मेरे सहस्रनामका जप, जो मेरे विश्वरूपका परिचायक है, करें अथवा जो मेरे एक सौ आठ नामोंका जप अथवा देवर्षि नारदद्वारा कहे श्रीराम-स्तवराजका पाठ अथवा हनुमान्‌जीद्वारा कहे गये मन्त्र-राजात्मक स्तोत्र तथा सीतास्तोत्र या श्रीरामरक्षा आदि इन स्तोत्रोंसे नित्य मेरी स्तुति करते हैं, वे भी मेरे समान हो जाते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं।'

॥ अथर्ववेदीय श्रीरामोपनिषद् समाप्त॥

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!